



पशुधन संकल्प

e - Magazine

Available online at
<https://psem.vitalbiotech.org>

Article ID: PS/26/12

पशुओं के सामूहिक स्वास्थ्य की देखभाल रोगों से बचाव और स्वच्छता व्यवस्था



डॉ. अंकेश कुमार

प्राध्यापक, बिहार पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, पटना-800014

परिचय

पशुपालन में केवल एक पशु की देखभाल करना पर्याप्त नहीं है। डेयरी फार्म या पशुशाला में सभी पशुओं के स्वास्थ्य की सामूहिक रूप से देखभाल करना आवश्यक होता है। इसे झुंड स्वास्थ्य प्रबंधन भी कहा जा सकता है। स्वस्थ पशुओं का झुंड ही अधिक उत्पादन देता है और पशुपालक को आर्थिक लाभ पहुंचाता है। यदि एक पशु संक्रामक रोग से ग्रसित हो जाए और समय पर सावधानी न बरती जाए, तो बीमारी पूरे झुंड में फैल सकती है। इसलिए रोग होने के बाद उपचार करने से बेहतर है कि पहले से रोगों की रोकथाम की व्यवस्था की जाए। पशुओं के सामूहिक स्वास्थ्य की देखभाल में उचित पोषण, नियमित टीकाकरण, कृमिनाशन, साफ-सफाई, स्वच्छ पानी, उचित आवास, रोगी पशु को अलग रखना तथा नियमित पशु चिकित्सा जांच शामिल हैं।

1. स्वस्थ पशुओं का नियमित निरीक्षण

पशुपालक को प्रतिदिन अपने पशुओं का ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना चाहिए। पशु के खाने-पीने, जुगाली करने, चलने-फिरने तथा व्यवहार में किसी भी परिवर्तन को गंभीरता से लेना चाहिए।



लेख इतिहास

Received : 24. 08.2026
Revised : 28. 08.2026
Accepted : 06. 09.2026



अनुरूपी लेखक

अंकेश कुमार*

E-mail ID:

dr43ankesh@gmail.com



Open Access

This article is published under the terms of the
[Creative Commons Attribution License 4.0.](#)

निम्न लक्षणों पर विशेष ध्यान देना चाहिए:

- पशु का चारा न खाना।
- जुगाली बंद होना।
- तेज या कम बुखार।
- दूध उत्पादन में अचानक कमी।
- दस्त या कब्ज।
- खांसी या नाक से पानी आना।
- मुंह से अधिक लार निकलना।
- लंगड़ापन।
- आंखों का लाल होना या पानी आना।
- शरीर पर सूजन।
- असामान्य रूप से सुस्त दिखाई देना।

रोग के प्रारंभिक लक्षण पहचान लेने से समय पर उपचार संभव होता है और बीमारी को अन्य पशुओं में फैलने से रोका जा सकता है।

2. रोगों से बचाव के लिए टीकाकरण

टीकाकरण पशुओं को संक्रामक रोगों से बचाने का सबसे महत्वपूर्ण उपाय है। पशुपालक को अपने क्षेत्र के पशु चिकित्सक या पशुपालन विभाग द्वारा निर्धारित टीकाकरण कार्यक्रम का पालन करना चाहिए।

पशुओं में सामान्य रूप से निम्न रोगों के विरुद्ध टीकाकरण महत्वपूर्ण हो सकता है:

- खुरपका-मुंहपका रोग (FMD)
- गलाघोंटू रोग (HS)
- ब्लैक क्वार्टर या लंगड़ा बुखार (BQ)
- ब्रुसेल्लोसिस
- क्षेत्र विशेष में पाए जाने वाले अन्य रोग

टीकाकरण सही समय पर कराना आवश्यक है। टीका लगवाने के बाद उसका रिकॉर्ड भी रखना चाहिए।

रिकॉर्ड में निम्न जानकारी लिखें:

- पशु की पहचान संख्या।
- टीकाकरण की तारीख।
- लगाए गए टीके का नाम।

- अगली टीकाकरण तिथि।

इससे भविष्य में किसी भी पशु का स्वास्थ्य रिकॉर्ड आसानी से देखा जा सकता है।

3. पेट के कीड़ों से बचाव और कृमिनाशन

पेट के कीड़े पशुओं की वृद्धि और उत्पादन को प्रभावित करते हैं। विशेष रूप से बछड़े और बछियां कृमि संक्रमण से अधिक प्रभावित हो सकते हैं।

पेट के कीड़ों के कारण:

- पशु कमजोर हो जाता है।
- शरीर का वजन नहीं बढ़ता।
- भूख कम हो सकती है।
- दस्त हो सकते हैं।
- खून की कमी हो सकती है।
- दूध उत्पादन कम हो सकता है।

इसलिए पशुओं का कृमिनाशन पशु चिकित्सक की सलाह के अनुसार समय-समय पर करना चाहिए। पशुपालक को बिना सलाह के बार-बार एक ही कृमिनाशक दवा का उपयोग नहीं करना चाहिए। दवा की मात्रा पशु के वजन और उम्र के अनुसार होनी चाहिए।

4. पशुशाला की साफ-सफाई

स्वच्छ पशुशाला स्वस्थ पशुओं की पहली आवश्यकता है। गंदगी और नमी कई प्रकार के जीवाणु, विषाणु, मक्खी, मच्छर और परजीवियों के बढ़ने का कारण बनती है। पशुशाला की नियमित सफाई करनी चाहिए।

प्रतिदिन:

- गोबर हटाएं।
- मूत्र की निकासी करें।
- गीले स्थान को सुखाएं।
- बचा हुआ चारा हटाएं।
- पानी की नांद साफ करें।
- दूध दुहने का स्थान स्वच्छ रखें।

पशुशाला का फर्श सूखा और फिसलन रहित होना चाहिए। अत्यधिक नमी से खुरों की बीमारी तथा त्वचा संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।

5. स्वच्छ पीने के पानी की व्यवस्था

पानी पशुओं के स्वास्थ्य और दूध उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक है। पशुओं को हमेशा पर्याप्त मात्रा में स्वच्छ पानी उपलब्ध होना चाहिए। पानी की टंकी या नांद को नियमित रूप से साफ करना चाहिए। गंदे पानी में गोबर, मिट्टी और रोगाणु मिल सकते हैं, जिससे पशुओं को संक्रमण हो सकता है। विशेष रूप से गर्मी के मौसम में पशुओं को पर्याप्त पानी मिलना चाहिए। पानी की कमी से पशुरू

- कम चारा खाते हैं।
- दूध कम देते हैं।
- कमजोर हो जाते हैं।
- गर्मी के तनाव से प्रभावित हो सकते हैं।

6. संतुलित पोषण द्वारा रोगों से बचाव

अच्छा पोषण पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाता है। कमजोर और कुपोषित पशु बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं।

पशुओं को संतुलित आहार में निम्न चीजें मिलनी चाहिए:

- हरा चारा।
- सूखा चारा।
- संतुलित दाना।
- खनिज मिश्रण।
- नमक।
- पर्याप्त स्वच्छ पानी।

केवल भूसा या एक प्रकार का चारा देना उचित नहीं है। पशु के शरीर, उम्र, गर्भावस्था, दुग्ध उत्पादन और कार्य के अनुसार आहार देना चाहिए। खनिज मिश्रण विशेष रूप से प्रजनन, हड्डियों की मजबूती और रोग प्रतिरोधक क्षमता के लिए उपयोगी है।

7. बीमार पशु को तुरंत अलग रखें

यदि किसी पशु में संक्रामक रोग के लक्षण दिखाई दें, तो उसे स्वस्थ पशुओं से तुरंत अलग करना चाहिए। इसे पृथक्करण या आइसोलेशन कहते हैं।

बीमार पशु को अलग रखने से:

- बीमारी का प्रसार रुकता है।
- स्वस्थ पशुओं की सुरक्षा होती है।
- बीमार पशु की उचित देखभाल हो पाती है।

बीमार पशु के लिए अलग:

- बर्तन,
- पानी की नांद,
- चारा खिलाने की व्यवस्था। रखना बेहतर होता है।

बीमार पशु को संभालने के बाद पशुपालक को हाथ अच्छी तरह धोने चाहिए और यदि संभव हो तो कपड़े एवं जूते भी साफ करने चाहिए।

8. नए पशु को तुरंत झुंड में न मिलाएं

यदि कोई नया पशु खरीदा गया है, तो उसे तुरंत पुराने पशुओं के साथ नहीं रखना चाहिए। नया पशु बाहर से कोई बीमारी लेकर आ सकता है। नए पशु को कुछ समय तक अलग रखकर उसका स्वास्थ्य परीक्षण कराना चाहिए।

इस दौरान:

- बुखार जांचें।
- भूख और व्यवहार देखें।
- पशु चिकित्सक से जांच कराएं।
- आवश्यक टीकाकरण और कृमिनाशन कराएं।

स्वस्थ होने की पुष्टि के बाद ही उसे मुख्य झुंड में शामिल करना चाहिए।

9. मक्खी, मच्छर और बाहरी परजीवियों का नियंत्रण

पशुशाला में मक्खियां, मच्छर, जूं और किलनी पशुओं को परेशान करते हैं तथा कुछ रोगों को फैलाने में भूमिका निभा सकते हैं।

इनके नियंत्रण के लिए:

- गोबर का नियमित निपटान करें।
- पानी जमा न होने दें।
- नालियों को साफ रखें।
- पशुशाला में उचित वेंटिलेशन रखें।
- आवश्यकता पड़ने पर पशु चिकित्सक द्वारा सुझाए गए परजीवी नियंत्रण उपाय अपनाएं।

किलनी और जूं की नियमित जांच करनी चाहिए, विशेषकर गर्दन, कान, पूंछ तथा शरीर के छिपे हुए भागों में।

10. पशुशाला में उचित वातावरण

पशुओं को स्वस्थ रखने के लिए पशुशाला में पर्याप्त:

- हवा,
- प्रकाश,
- छाया,
- स्थान होना चाहिए।

बहुत अधिक भीड़भाड़ पशुओं में तनाव बढ़ाती है और बीमारी के फैलने की संभावना भी बढ़ाती है। गर्मी में छाया और ठंडे पानी की व्यवस्था करनी चाहिए। सर्दी और बारिश में पशुओं को ठंडी हवा और अत्यधिक नमी से बचाना चाहिए।

11. दूध दुहने में स्वच्छता

दूध दुहने से पहले पशु के थन और थनाग्र को साफ पानी से धोकर स्वच्छ कपड़े से सुखाना चाहिए। दूध दुहने वाले व्यक्ति के हाथ भी साफ होने चाहिए। गंदे हाथों या गंदे बर्तनों

से दूध में जीवाणु पहुंच सकते हैं। इससे दूध की गुणवत्ता खराब हो सकती है और थनैला जैसी समस्याओं का खतरा बढ़ सकता है। दूध दुहने के बाद भी थन की सफाई और उचित देखभाल आवश्यक है।

12. नियमित पशु चिकित्सा सलाह

पशुपालक को केवल पशु बीमार होने पर ही पशु चिकित्सक से संपर्क नहीं करना चाहिए। स्वस्थ पशुओं के झुंड के लिए भी समय-समय पर पशु चिकित्सक की सलाह लेना उपयोगी होता है।

पशु चिकित्सक की सहायता से:

- टीकाकरण कार्यक्रम बनाया जा सकता है।
- कृमिनाशन की योजना बनाई जा सकती है।
- प्रजनन समस्याओं की जांच हो सकती है।
- पोषण संबंधी सलाह मिल सकती है।
- संक्रामक रोगों की रोकथाम की जा सकती है।

निष्कर्ष

पशुओं के सामूहिक स्वास्थ्य की देखभाल सफल पशुपालन का आधार है। पशु बीमार होने के बाद इलाज कराने की अपेक्षा बीमारी को होने से रोकना अधिक लाभदायक और कम खर्चीला होता है। स्वस्थ झुंड के लिए पशुपालक को नियमित निरीक्षण, संतुलित आहार, स्वच्छ पानी, साफ पशुशाला, समय पर टीकाकरण, कृमिनाशन तथा बीमार पशुओं को अलग रखने की व्यवस्था करनी चाहिए।

पशुपालकों के लिए मुख्य संदेश

स्वच्छ पशुशाला + संतुलित आहार
स्वच्छ पानी + नियमित टीकाकरण + परजीवी नियंत्रण + समय पर पशु चिकित्सा सलाह =
स्वस्थ पशु और अधिक उत्पादन।